सद्गुरु जग्गी वासुदेव

फोटो शेयर करें

आप जिनसे बहुत प्रेम करते हैं या जिनसे आप बहुत घृणा करते हैं, उन दोनों के साथ ही आपका बहुत सारा कर्म बंधन है। कई बार होता है कि आप किसी इंसान से कभी नहीं मिले, फिर भी आप उससे नफरत करते हैं। तो कर्म इस वजह से नहीं होता, क्योंकि आप जीवन में किसी से संबंध बनाते हैं, बल्कि कर्म इसलिए हैं कि आप अपने अंतर्मन में किस तरह जूझ रहे हैं। यह ऐसी चीज है, जो जीवन आपके साथ नहीं कर रहा, बल्कि आप अपने साथ खुद कर रहे हैं।

आप अपने साथ किस तरह का कर्म करते हैं, इसका चुनाव आपको खुद करना है। आप चाहें तो आनंदमय हो सकते हैं, आप चाहें तो दुखी रह सकते हैं। आप चाहें तो कृतज्ञता में जी सकते हैं, आप चाहें तो बिना कारण खुद को तकलीफ दे सकते हैं। सबकुछ आपका ही किया-धरा है। कर्म का अर्थ है: करनी। किसकी करनी...मेरी अपनी करनी। आपको समझ लेना है कि जीवन स्वयं आपका रचा हुआ है। मैं जो कुछ भी हूं वह मेरा ही किया हुआ है। इसीलिए इससे मुक्ति पाई जा सकती है।

अगर यह भगवान की करनी होती तो आप इसका तोड़ कहां से निकाल पाते। चूंकि इसे आपने बनाया है, इसलिए आप ही इसे तोड़ सकते हैं। आप आसपास मौजूद इंसान का इस्तेमाल अपने कर्म को तोड़ने, मुक्ति का कर्म करने या फिर बंधन का कर्म करने के लिए कर सकते हैं। इस तरह आप लगातार कुछ न कुछ करते रहते हैं। आप इससे बच नहीं सकते। अगर आप जागरुक हैं तो मुक्ति का कर्म करेंगे, लेकिन अगर आप जागरूक नहीं है तो बंधन का कर्म करेंगे।